अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मंडल, मुंबई.

परीक्षा सत्र : नवम्बर-दिसम्बर 2023

परीक्षा का नाम : अलंकार पूर्ण (द्वितीय प्रश्नपत्र)

विषय : गायन तथा स्वरवाद्य वादन

दि. 19/11/2023 समय : दोपहर 2 से 5 कुल अंक : 100

सूचनाएँ : (१) कुल सात प्रश्नों मे से पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखिये ।
(२) सभी प्रश्नों के अंक समान है ।

प्र.1. दिये गये बिंदुओं के आधारपर टिप्पणियाँ लिखिये। (कोई भी दो) (10+10=20)

1. पार्श्वसंगीत– व्याप्ती, विभिन्न संगीतकारों ने इस विषय में किये विचार, इसमें प्रयुक्त वाद्यमेळ (भारतीय, पाश्चात्य), महत्त्व (उदाहरणसहित)
2. सी.रामचंद्र और एस्.डी.बर्मन इनका चित्रपट संगीत में योगदान– इनके अलग ढंग के बारे में उदाहरणसहित विचार, भारतीय, पाश्चात्य संगीत का किया हुआ उपयोग, उनके दो प्रसिद्ध गीतों का मुखडा.
3. पार्श्वगायन का महत्त्व– पार्श्वगायन की परिभाषा, कौनसी सदी में पार्श्वगायन शुरु हुआ, इसकी व्याप्ती.
4. संगीतिका– निर्मिती का कारण, प्रस्तुतीकरण का विषय, प्रस्तुती के प्रकार.

प्र.2. संगीत रचना में स्वरसंगती, लय, छंद और भाषा इन तत्त्वों का महत्त्व स्पष्ट कीजिये। (20)

प्र.3. हिंदुस्थानी एवं कर्नाटक संगीत गायन की निम्न बिंदुओं पर चर्चा कीजिये। (20)

स्वर, राग, ताल और बंदिश

प्र.4. भारतीय संगीत वाद्यों के वर्गीकरण की उदाहरणसहित जानकारी दिजिये। (10)

निम्नलिखित किसी दो वाद्यों की विस्तृत जानकारी लिखिये। (5+5=10)

1) मृदंग 2) वंशी 3) किन्नरी वीणा 4) हुडुक्का

प्र.5. निम्नलिखित संगीत तंज्ञों का संगीत में दिया हुआ योगदान स्पष्ट करें। (कोई 2) (10+10=20)

1) सुरेंद्रमोहन टैगोर 2) पं.विष्णु नारायण भातखंडे

3) पं.ओंकारनाथ ठाकूर 4) मौलाबक्श

प्र.6. नीचे दिये गये काव्य को योग्य राग–ताल में लिपीबद्ध किजिये।(20)

हूँ तो बार बार तोरे मिलन को सैया,
हमरी बात कछु मानत प्यारे।
तुमरे मिलन की आस जिया में
तरपत हूँ दिन रैना प्यारे॥

प्र.7. अ) जोडी लगाइये। (10)

अ	ब
1. चित्रपट संगीत	1. प्रो.प्रेमलता शर्मा
2. कीबोर्ड वाद्य	2. धनवाद्य
3. पार्श्वगायिका	3. पं.रविशंकर
4. राग चंद्रिकासार	4. 7 प्रमुख ताल
5. रससिध्दान्त	5. संगीत रत्नाकर
6. करताल	6. भरतमुनी
7. वृंदवादन	7. ओ.पी.नय्यर
8. कर्नाटक संगीत	8. ॲकॉर्डियन
9. दशरागगायनविधी	9. सुरैय्या
10. श्रुती स्वर व्यवस्था	10. अप्पा तुलसी.

ब) सही (✓) या गलत (X) लिखिये। ☐ (10)

1. चित्रपट में घटनाओं के बीच के रिक्त स्थान में संगीत आवश्यक है। ☐
2. सी.रामचंद्रजीने हिंदी चित्रपटसंगीत में शास्त्रीय, पाश्चात्य और लोकसंगीत इन तीनों गीत प्रकारोंका बखुबीसे प्रयोग किया। ☐
3. राग रचना में सप्तक के पूर्वांग और उत्तरांग में समतोल होना आवश्यक नहीं है। ☐
4. टप्पा गीत गायन की प्रकृती गंभीर है। ☐
5. हिंदुस्थानी संगीत पध्दती के 'शुद्ध निषाद' को कर्नाटक संगीत पद्धती में 'काकली निषाद' कहते है। ☐
6. कर्नाटक तालपद्धती में ताल के बोल और ठेका होता है। ☐
7. समूहगायन के गीत में सांस्कृतिक, सामाजिक और राष्ट्र विषयों का वर्णन आवश्यक है। ☐
8. मतंग मुनी के कालखंड में सारिकायुक्त किन्नरी वीणा प्रचार में थी। ☐
9. भरतमुनी के कालखंड में राग गायन प्रचलित था। ☐
10. नवराग निर्मिती में राग नियमों का पालन करना आवश्यक नहीं है। ☐